दादा भगवान परिवार का
अगस्त २०२४
शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

एक माली था। उसके पास एक ऐसे सुंदर फूल का बीज था, जो दुनिया में कहीं और देखने नहीं मिलता। एक बार उसके पास वाले बगीचे में बहुत सुंदर फूल खिले। यह देखकर माली अपने बीज की देखभाल करने के बजाय पास वाले बगीचे को देखकर जलने लगा। और ऐसा करने में उसका अपना बीज बर्बाद हो गया।

आपको लगता होगा कि यह कैसी मूर्खता है! लेकिन क्या कभी हमसे भी ऐसा हुआ है? क्या दूसरों की प्रगति देखकर कभी हमारा आगे बढ़ना रुक गया है? चलो, इस अंक में देखते हैं कि सही मायने में आगे कैसे बढ़ा जाए? हमें आगे बढ़ने से कौन रोकता है? सुजॉय ने आगे बढ़ने के लिए क्या किया? गेमपुरी के गेम्स ने बच्चों का दिल कैसे जीता? थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स ने चॉकलेट वर्ल्ड में जाकर क्या सीखा? और हाँ! अंत में आलु-चिली की दुनिया में जाकर देखें कि चिली के धर पर आलु के साथ क्या हुआ ।

-डिम्पल मेहता

वर्ष : १२ अंक : ०५
अखंड क्रमांक : १३७
अगस्त २०२४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhatral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

© 2024, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

नीरू माँ : आप दृढ़ निश्चय करते हो कि 'मुझे आगे बढ़ना है' लेकिन दूसरों को गिराकर आगे जाना चाहते हो इसलिए नुकसान उठाते हो। एक लकीर हो और उससे बड़ी एक लकीर बनानी हो तो उस लकीर को काटकर दूसरी लकीर को बड़ा नहीं बनाना है। उससे बड़ी एक दूसरी लकीर बनाओ। इसी तरह, आप अपने गुण, अपनी क्वॉलिटिज़ बढ़ाओ। लेकिन आप क्या करते हो? सामने वाले को गिराकर आगे बढ़ने जाते हो। और यही चीज खुद को आगे बढ़ने से रोकती है। किसी को पीछे ढकेलकर आगे नहीं बढ़ना है। उसे भी आगे बढ़ने दो और खुद भी आगे बढ़ो। यह हेल्दी कॉम्पिटिशन कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन, यदि फ्रेन्ड आगे बढ़ जाता है तो मुझे जेलसी होती है।

नीरू माँ : जेलसी नहीं करनी चाहिए। स्पोर्टिली रहना चाहिए। यदि आप उसको एप्रीशिएट करोगे तो जेलसी नहीं होगी। उसके अच्छे मार्क्स आए हों तो उसके लिए खुश होना चाहिए कि कितना होशियार है, कितनी मेहनत करता होगा! उसके पॉज़िटिव देखने से आपके अंदर से जेलसी निकल जाएगी। आप अपने तरीके से मेहनत करो। ज्यादा पढ़ाई करो।

अपनी कपैसिटी के अनुसार आगे बढ़ो। यदि आपको पाँच नंबर के जूते आते हों और सामने वाले ने सात नंबर के पहने हों, तो क्या आपको भी सात नंबर के जूते पहनने चाहिए? आप पाँच नंबर के पहन के घूमो आराम से। तो आप गिर नहीं जाओगे।

AALOO CHILLY

मुझे घर आए एक घंटा हो गया था। लेकिन अभी भी मुझे अंदर गरम-गरम लग रहा था। मुझे लगता है कि थीओ के शेक में कुछ गड़बड़ी थी। तभी अचानक पार्सली ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाने लगा। 'समोसा जिसके बिना अधूरा, वह है आलु, जितेगा जो आज चैम्पियनशिप, वह सबका फेवरिट आलु।'

बोलो, जब इसे बोलना था तब नहीं बोला और अब मेरी कविता गा रहा है। ऊपर से मम्मी उसे देखकर खुश हो रही थीं। मुझे लगा 'कविता मेरी है और मम्मी उसे देखकर खुश हो रही हैं।' मुझे यकीन है कि पार्सली ही मम्मी का फेवरिट है। मुझे अंदर इतना गरम लगा कि मैंने कुछ ठंडा-ठंडा खाकर रूम में जाकर सो जाने का निश्चय किया। तभी...

मेरा नाम सुनते ही मैंने सोने की एक्टिंग की। मेरा किसी से मिलने का मूड नहीं था। तभी पार्सली ने आकर मुझसे कहा, 'आलुभाई आपको बुला रहे हैं।' आलु कब से 'भाई' हो गया! पार्सली ने मुझे तो कभी इतना सम्मान नहीं दिया। लेकिन उस समय मैं उसके साथ झगड़ा नहीं करना

चाहता था क्योंकि अभी मुझे उससे काम था। मैंने उसे धीरे से कहा, 'तुम आलु से जाकर कह दो कि चिली सो गया है।' वह मुझे देखता ही रह गया। फिर मैंने उससे कहा, 'यदि तुम ऐसा कहोगे तो मैं तुम्हें एक वीक तक रोज चिली शेक पिलाऊँगा।' यह सुनकर उसकी आँखों में चमक आ गई। और वह तुरंत ही उड़कर बाहर गया।

सचमुच, मूर्खता का कोई स्कूल होता तो पार्सली का उसमें हमेशा पहला नंबर आता! मैं तुरंत ही उड़कर बाहर गया। आलु पार्सली की बात से कन्फ्यूज़ था लेकिन मुझे देखकर खुश हो गया। और पार्सली मुझे देखकर ज्यादा कन्फ्यूज़ हो गया। उसने मुझसे कहा, 'लेकिन तुमने तो कहा था कि तुम...' मैंने उसका मुँह बंद किया और कहा कि 'अभी तुम चुपचाप यहाँ से चले जाओगे तो मैं तुम्हें एक वीक तक चिली शेक पिलाऊँगा।' उसने इशारा किया, 'दो'।

मम्मी को पार्सली कितना मासूम और भोला लगता है। लेकिन वह कितना बदमाश है वह मुझे ही पता है। पार्सली वहाँ से चला गया और आलु मेरे पास आया। उसने मुझे अपनी ट्रॉफी दिखाई और मुझे गले लगा लिया, 'मैं जीत गया!' मुझे खुशी होनी चाहिए थी, लेकिन पता नहीं मुझे फिर से अंदर इतना ज्यादा गरम-गरम लगने लगा कि मैं क्या बताऊँ! अब मैं यह सुन-सुनकर थक गया था कि 'आलु जीत गया'।

आलु की छोटी-छोटी सफलताओं में हमेशा खुश होने वाले चिली को आज इतनी बड़ी सफलता में खुशी क्यों नहीं हो रही? आपको क्या लगता है?

क्लिक इट राइट

दार्जिलिंग के 'लिटल फ्लावर' स्कूल के पंद्रह बच्चों का 'क्लिक-क्लिक' फोटोग्राफी क्लास के लिए सिलेक्शन हुआ था। क्लास का पहला दिन था। अभिजीत सर क्लास में आए तब सभी बच्चे अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए थे।

'सबसे पहले मैं आप सभी को बधाई देना चाहूँगा कि आप इस क्लास के लिए सिलेक्ट हुए। मुंबई के 'फोटो तत्व' संस्था की मदद से हम इस क्लास का आयोजन कर पाए हैं। उन्होंने सभी विद्यार्थियों के लिए कैमरे दिए हैं। इतना ही नहीं, कोर्स के अंत में एक बेस्ट फोटोग्राफ सिलेक्ट किया जाएगा। एक प्रदर्शनी में उस फोटो को दिखाया जाएगा। और अंत में सभी को अपने फोटोग्राफ्स पर मिस्टर दत्ता का ऑटोग्राफ भी मिलेगा। तो सब तैयार हो न?'

बच्चे बहुत उत्साहित थे। यह कोर्स न केवल सीखने के बारे में था, बल्कि इसके और भी कई फायदे थे।

फिर सर ने सभी को कार्डबोर्ड का एक कैमरे का कट आउट दिखाया और एक पार्ट की तरफ इशारा करते हुए पूछा, 'इसे क्या कहते हैं?'

अन्विक ने तुरंत कहा, 'व्यू फाइन्डर'।

अन्विक के जवाब से सर बहुत खुश हुए। फर्स्ट बेन्च पर बैठे सुजॉय ने पीछे मुड़कर अन्विक की ओर देखा और फिर तुरंत ही मुँह फेर लिया। सुजॉय को सही जवाब नहीं पता था। लेकिन उसे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई कि अन्विक सही जवाब दे पाया। फोटोग्राफी के कुछ बेसिक सिद्धांत सिखाकर सर ने क्लास समाप्त की। क्लास के बाद अन्विक सर के साथ कुछ बात करने गया। सुजॉय दूर से अन्विक और सर को देख रहा था। अंत में सर ने अन्विक का कंधा थपथपाया। यह दृश्य देखकर सुजॉय को ईर्ष्या हुई।

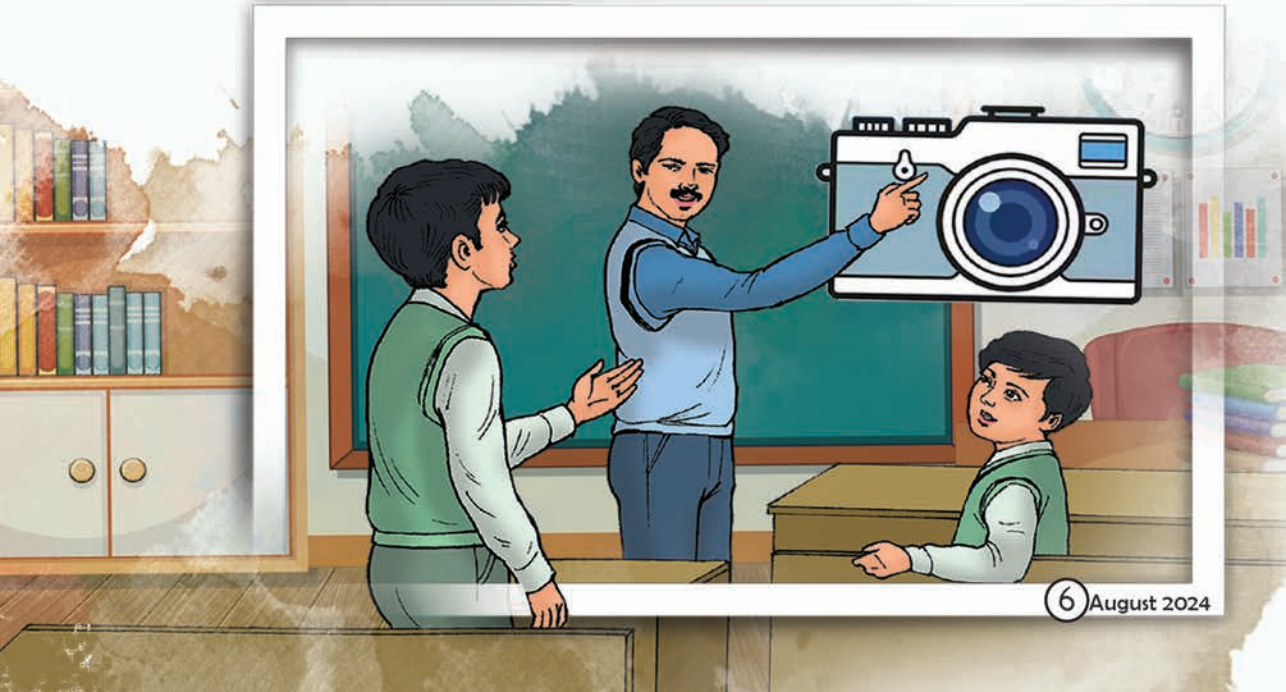

अगले दिन क्लास में सर ने कैमरा पकड़ने का सही तरीका सिखाया। और फिर सभी को अपना-अपना कैमरा पकड़ने को कहा। सर ने दो-तीन स्टूडन्ट्स की गलती सुधारी।

और फिर सुजॉय की ओर देखकर कहा, 'हंम... परफेक्ट! कैमरे को इसी तरह पकड़ना चाहिए।' अपनी तारीफ सुनकर सुजॉय खुश हो गया। तभी सर ने अन्विक से कहा, 'तुमने भी कैमरे को एकदम स्थिर पकड़ा है, बेटा!' सुजॉय की खुशी तुरंत गायब हो गई। पता नहीं उसे क्या हो रहा था।

एक दिन क्लास के बाद सर ने घोषणा की, 'ओके फ्रेन्ड्स, हमारी नेक्स्ट क्लास क्लासरूम में नहीं बल्कि दार्जिलिंग के विश्व विख्यात स्थल 'टाइगर हिल' पर होगी।'

छुट्टी के दिन ट्रिप का आयोजन किया गया। सर ने आने-जाने की सारी व्यवस्था समझा दी। सभी को अपना-अपना कैमरा साथ में ले जाना था।

उस दिन सुबह से दोपहर तक बच्चों ने टाइगर हिल पर शानदार फोटोज़ लिए। कई दिनों के बाद सुजॉय को फोटोज़ खींचने में मज़ा आया। घर लौटते समय सर ने बस में बैठे-बैठे सबके फोटोज़ देखे। हर फोटो की तारीफ की और हर एक की खासियत बताई। सभी को प्रोत्साहन मिला। सुजॉय के फोटोज़ से सर बहुत प्रभावित हुए। 'सुजॉय, यह तुम्हारा अब तक का सबसे बेस्ट काम है। शाबाश बेटा!' उस दिन फोटो खींचते समय पहली बार सुजॉय का ध्यान अन्विक पर कम और अपने काम पर अधिक था। फिर सर ने अन्विक के फोटोज़ देखे और विशेष रूप से सराहना की। यह सुनकर फिर से सुजॉय को बहुत ईर्ष्या हुई।

उसके बाद सर ने एक घोषणा की, 'आज लिए गए फोटोज़ में से आपको जो फोटो बेस्ट लगे उसका प्रिन्ट आउट निकालकर नेक्स्ट क्लास में ले आना।' 'फोटो तत्व' संस्था के मिस्टर दत्ता हमारी क्लास में आएँगे और अपनी गैलरी में प्रदर्शित करने के लिए सभी फोटोज़ में से बेस्ट फोटो सिलेक्ट करेंगे। यह सुनकर कुछ बच्चे मिस्टर दत्ता से मिलने के लिए आतुर हो गए और कुछ घबरा गए। सुजॉय ने अन्विक की ओर देखा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता थी।

सुजॉय को अन्विक की प्रसन्नता छीन लेने का मन हुआ। उसके मन में विचार आया, 'सर को मेरे फोटोग्राफ्स बहुत पसंद आए हैं। यदि अन्विक के फोटोग्राफ्स होंगे ही नहीं, तो मेरे ही सिलेक्ट होंगे न!'

कुछ देर बाद, एक पेट्रोल पंप के पास बस रुकी। सभी बच्चे बस से नीचे उतर गए। सुजॉय सबसे आखिरी में था। उसने आस-पास नज़र दौड़ाई। कोई नहीं था। उसके दिल की धड़कनें बढ़ गईं। उसके हाथ काँपने लगे।

सुजॉय धीरे से अन्विक की सीट के पास गया। उसने फिर से आस-पास देखा। और फिर फटाफट काँपते हुए हाथों से अन्विक के कैमरे से मेमरी कार्ड निकालकर अपनी जेब में रख लिया। अन्विक से आगे निकलने के लिए वह कोई भी हद पार करने को तैयार हो गया।

पूरे रास्ते सुजॉय बैचेन रहा। वह मुँह लटकाए हुए बस स्टॉप से घर की ओर जा रहा था, तभी उसे एक परिचित आवाज सुनाई दी, 'हाइ, चैम्पियन!'

'विक्कू भैया!!!' सुजॉय दौड़कर उनके गले लग गया। कुछ देर के लिए वह अपनी सारी बातें भूल गया।

विक्कू भैया सुजॉय के पुराने पड़ोसी थे। वे उससे उम्र में काफी बड़े थे लेकिन एक फ्रेन्ड की तरह उसकी सारी बातें समझते थे। उन्हीं की वजह से सुजॉय को फोटोग्राफी में इन्ट्रेस्ट जागा था। एक वर्ष पहले ही विक्कू भैया अपने काम के सिलसिले में दार्जिलिंग छोड़कर मुंबई में बस गए थे।

विक्कू भैया से कुछ देर बात करके, दूसरे दिन मिलने का प्लान बनाकर सुजॉय घर गया।

दुसरे दिन सुबह सुजॉय और विक्कू भैया आराम से साइकल से पार्क की ओर जा रहे थे। तभी सुजॉय के क्लास के कुछ बच्चे उन्हें ओवरटेक करके आगे निकल गए। यह देखकर सुजॉय को गुस्सा आ गया। वह फास्ट-फास्ट साइकल चलाने लगा तो विक्कू भैया ने उसे रोका, 'दोस्त, क्या हुआ? वे लोग कहीं और जा रहे हैं और हम कहीं और जा रहे हैं। हमें उनके साथ रेस लगाकर क्या करना है? मैं तो तुम्हारे साथ साइकलिंग एन्जॉय करना चाहता हूँ।' सुजॉय ने स्पीड कम कर दी।

कुछ देर पार्क में घूमने के बाद विक्कू भैया और सुजॉय एक जगह बैठ गए। सुजॉय ने विक्कू भैया के पास अपने दिल का बोझ हल्का किया, 'विक्कू भैया, मुझे रेस लगाने की आदत हो गई है।' फोटोग्राफी क्लास में शुरुआत से लेकर अब तक जो-जो हुआ वह सारी बातें उसने विक्कू भैया को बताई। लेकिन मेमरी कार्ड वाली बात कहने की उसकी हिम्मत नहीं हुई।

विक्कू भैया ने शांति से उसकी सारी बातें सुनीं। फिर कैमरा निकालकर एक फूल की तरफ इशारा करते हुए पूछा, 'तुम्हें इस फूल का फोटो लेना हो तो तुम फूल पर फोकस करोगे, आसपास की चीज़ों पर नहीं। राइट? इसी

तरह हमें भी खुद पर ही फोकस करना चाहिए। किसी और पर फोकस करने से क्या फायदा!', विक्कू भैया ने कहा।

सुजॉय को याद आया कि टाइगर हिल पर जब उसने अन्विक के बजाय अपने काम पर फोकस किया था तो उसे बहुत मजा आया था।

'और एक बात हमेशा याद रखना दोस्त', विक्कू भैया ने आगे कहा, 'लाइफ में हम जहाँ हैं वहाँ से एक स्टेप आगे बढ़ना है। किसी और से आगे निकलने की बात नहीं है।' सुजॉय को भैया की बात बहुत अच्छी लगी।

'चलो, बहुत सीरियस बातें हो गईं। अब हम मोमोस खाने चलते हैं। विक्कू भैया सुजॉय को कैफे में ले गए।

दूसरे दिन फोटोग्राफी क्लास में सभी बच्चे उत्साहित थे, सिवाय अन्विक के सभी ने अपने फोटोज़ अभिजीत सर को दिए। अभिजीत सर ने बहुत प्यार से अन्विक को आश्वासन दिया, 'नेक्स्ट टाइम, बेटा!' अन्विक उदास होकर एक कोने में जाकर बैठ गया। तभी विक्कू भैया क्लास में दाखिल हुए।

'प्लीज़ वेलकम मिस्टर विकासदीप दत्ता ऑफ 'फोटो तत्व' इन्स्टिट्यूट', अभिजीत सर ने खड़े होकर विक्कू भैया से हाथ मिलाया। सभी बच्चों ने तालियाँ बजाईं। लेकिन सुजॉय उन्हें देखता ही रह गया।

'अरे, विक्कू भैया ही मिस्टर दत्ता हैं!' सुजॉय स्तब्ध रह गया। विक्कू भैया ने सुजॉय को एक शरारती स्माइल दी। अभिजीत सर ने विक्कू भैया को सारे फोटोज़ दिखाए। फोटोग्राफर के नाम फोटोज़ के पीछे लिखे थे। बिना नाम पढ़े ही विक्कू भैया ने एक फोटो को अपनी गैलरी के लिए सिलेक्ट किया। और वह फोटो सुजॉय का था।

सुजॉय को खुश होना चाहिए था लेकिन वह बिल्कुल भी खुश नहीं था। उसकी नज़र अन्विक पर गई। वह मुँह नीचे करके बैठा था। सुजॉय को अपनी गलती पर बहुत पछतावा हुआ। क्लास के अंत में विक्कू भैया ने सभी के फोटोग्राफ पर अपना ऑटोग्राफ दिया। उस समय अन्विक की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

सुजॉय से अपनी गलती का बोझ सहन नहीं हो पाया। उसे समझ में आ गया कि किसी को गिराकर आगे बढ़ने में कोई सुख नहीं है।

उस शाम उसने विक्कू भैया को सब कुछ सच-सच बता दिया। विक्कू भैया ने उसे प्रॉब्लम सॉल्व करने का उपाय बताया।

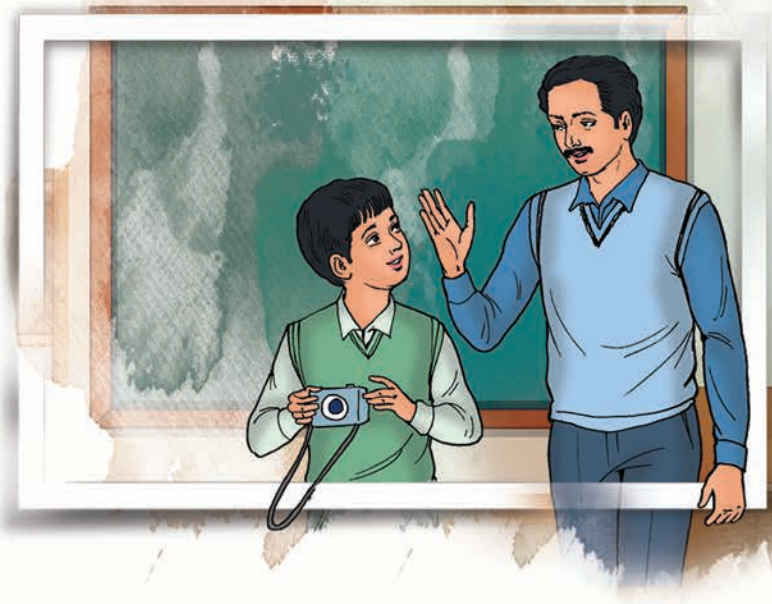

उसने दूसरे दिन अभिजीत सर के पास जाकर अपनी गलती स्वीकार की और अन्विक का मेमरी कार्ड सर को दिया। सर को सुजॉय पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने उसे डाँटकर कहा, 'अब ये मुझे देने से क्या फायदा? उस लड़के का मौका तो तुमने छीन लिया न?'

तभी अभिजीत सर का फोन बजा। दूसरी ओर विक्कू भैया थे। अभिजीत सर ने उनकी बात सुनी और फिर 'ओके, थैन्क यू' कहकर फोन रख दिया।

विकासदीप दत्ता ने अपनी गैलरी के लिए सुजॉय के बदले अन्विक का फोटो सिलेक्ट कर लिया था।

प्रदर्शनी के दिन अन्विक फोटो गैलरी में अपने फोटो के पास खड़ा था। सुजॉय उसके पास गया और कहा, 'आइ ऐम रियली सॉरी, अन्विक। क्या तुम मुझे माफ करोगे?'

उस दिन पहली बार सुजॉय को अन्विक का लिए हुआ फोटो अपने फोटो से बेहतर लगा। पहली बार उसने अन्विक की फोटोग्राफी को दिल से एप्रिशिएट किया। उसने धीरे से अन्विक से पूछा, 'मेरे फोटोग्राफ पर अपना ऑटोग्राफ दोगे?'

और बस, तभी से सुजॉय ने बिना किसी और को देखे खुद जहाँ खड़ा है वहीं से एक कदम आगे बढ़ने की शुरुआत की।

चलो खेलें...

१) नीचे दिए गए चित्र में पाँच गलतियाँ हैं उसे ढूँढो।

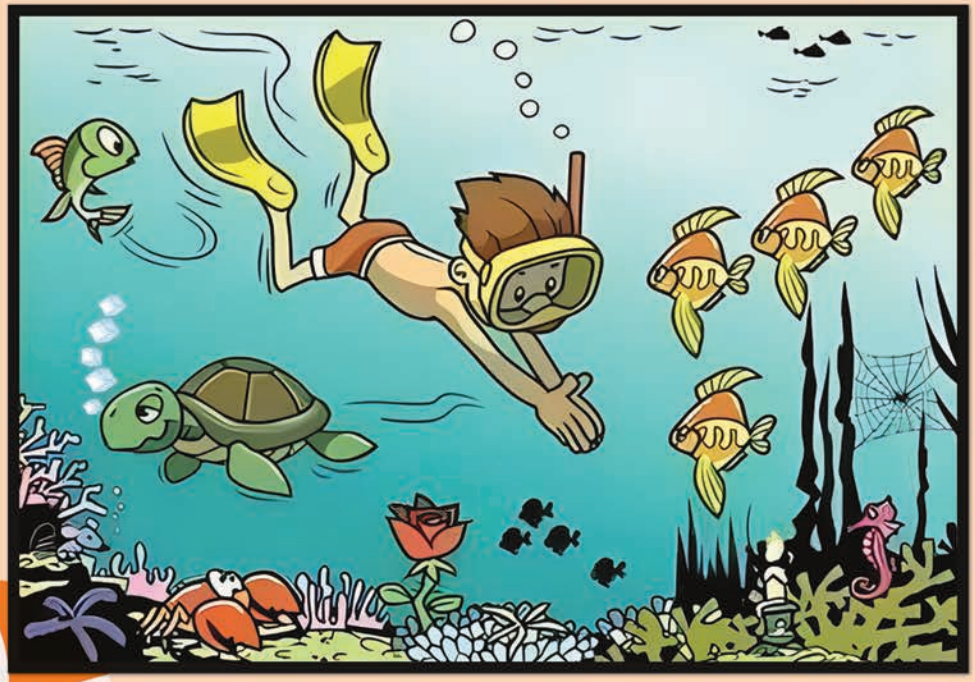

२) पास में दिए गए चित्र में से कोई भी तीन माचिस की तीलियाँ निकालकर उसके तीन चौकोर बनाओ।

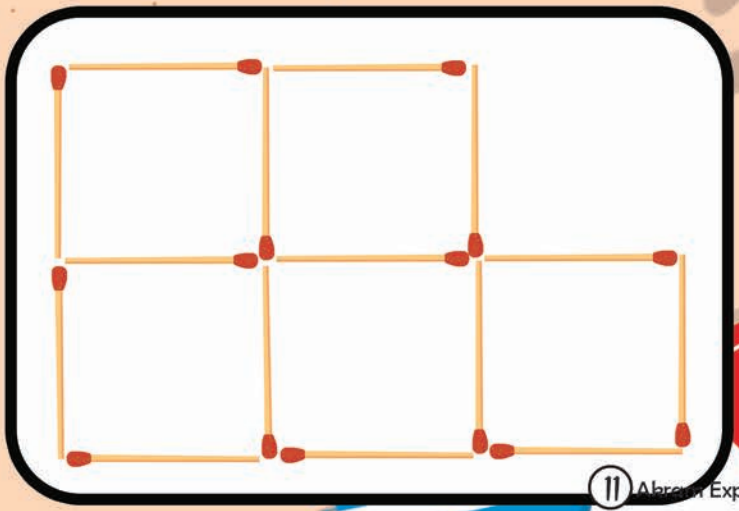

गेमपुर
२० साल पहले, गेम्स के शहर 'गेमपुर' में उस दिन बहुत हलचल थी।
'खेल - कूद' इलाके के गेम्स एक ओपन ट्रक में माइक और पोस्टर्स लेकर 'वीडियो गेम्स' के इलाके से गुजर रहे थे।
सुनो... सुनो... सुनो...
अरे, कहाँ खो गए? कुछ आगे भी तो बोलो।
मेरा माइक बंद हो गया।
अच्छा, अच्छा। 'नदी पहाड़' तुम किस पहाड़ की चोटी पर छुप गए हो? वह वाला पोस्टर खोलो।
Say No To Vidio Game

पहले 'वीडियो' की सही स्पेलिंग सीखो। फिर विरोध करो।
तुम लोग खुद तो ऊँचे उठ नहीं सकते। और बस, हमें नीचे गिराने की कोशिश कर रहे हो। भागो यहाँ से।
Say No To Video Game
सभी गेम्स निराश होकर घर आ गए। पज़ल को एक आइडिया सूझा। उसने एक बॉक्स का चित्र बनाया।
अब बोलो, इस बॉक्स को हाथ लगाए बिना छोटा करना हो तो क्या करोगे?
KEY LOCK
हाथ लगाए बिना तो किस तरह छोटा कर सकते हैं? छोटा करने के लिए इसे मिटाना होगा।
सभी चुप हो गए।
एक दूसरा बड़ा बॉक्स बनाएँ तो? यह बॉक्स उसके आगे छोटा हो जाएगा न!
नहीं, नहीं। सोचो, कुछ उपाय सूझेगा।
13
Akram Express

इसी तरह वीडियो गेम्स को तोड़े बिना भी आप प्रोग्रेस कर सकते हो।
वह कैसे पॉसिबल है?
सभी ने हार मान ली। लेकिन क्रिकेट ने हार नहीं मानी। उसने रिसर्च शुरू की।
वाउ! अब पता चला कि बच्चों को वीडियो गेम्स इतनी क्यों पसंद हैं।
क्यों?
क्योंकि वे लोग अपग्रेड होते रहते हैं। सत्तर के दशक में पहला वीडियो गेम आया था।
लेकिन उस समय के गेम्स और आज के गेम्स में कितना अंतर है! वे लोग अपने आप को डेवलप करते रहते हैं।
हमें उन्हें नहीं तोड़ना है। स्वयं ही डेवलप होना है। हमारी स्पर्धा उनके साथ नहीं है, बल्कि अपने आप के साथ ही है।
क्रिकेट ने डेवलप होने के बहुत सारे आइडिया सोचे। आखिरकार उसे एक जबरदस्त आइडिया आया।

बीस वर्ष पहले का वह दिन आज भी सभी को अच्छी तरह याद है।
उस दिन पहली बार ट्वेन्टी-ट्वेन्टी (T-20), यानी कि बीस ओवर का मैच खेला गया। हमें स्टेडियम में कितना मज़ा आया था!
सच में, क्रिकेट ने कितना डेवलप किया है। जब-जब वह बोरिंग हो जाता है, तब-तब गेम को इन्ट्रेस्टिंग बनाने के आइडिया ढूँढ़ निकालता है।
और वीडियो गेम्स भी। आज वे लोग कहाँ से कहाँ पहुँच गए हैं।
और हम वहीं के वहीं हैं। हमें तो कोई याद भी नहीं करता है।
चलो, हम भी आगे बढ़ते हैं!
लेकिन किस तरह?
क्या आपके पास कोई आइडिया है? किसी भी दो आउटडोर गेम को और ज्यादा इन्ट्रेस्टिंग बनाना हो तो आप क्या करोगे?
KEY LOCK

यह तो नई

ईर्ष्या करने से क्या फायदा है? ईर्ष्या करने से सामने वाले को क्या नुकसान होने वाला है? खुद को ही नुकसान होता है। खुद को भयंकर भोगवटा आता है। खुद की प्रगति अटकती है।

हेल्दी कॉम्पिटिशन कैसा होता है? दूसरों को नुकसान पहुँचाए बिना खुद आगे बढ़े या खुद अपनी दिशा बदल दे, नई चीज़ डेवलप करे।

हीं बात है!

दूसरों को कुछ सिखाने से आपका ज्ञान दस गुना बढ़ जाता है। वह एक सीखेगा तो आप दस गुना सीख जाओगे। उदाहरण के तौर पर : यदि आपका मित्र आपको पूछने आए, 'मुझे यह सवाल सिखाओगे?' तो आप दिल से सिखाना। ऐसा मत सोचना कि अगर मैं इसे नहीं सिखाऊँगा तो उसे कम मार्क्स मिलेंगे और मेरे मार्क्स बढ़ जाएँगे।

कोई अच्छा काम कर रहा हो तो उसे एप्रीशिएट करना चाहिए कि 'बहुत अच्छा किया' तो आप भी आगे बढ़ोगे।

'हैपी बर्थ डे टू यू, हैपी बर्थ डे डियर अक्रम एक्सप्रेस! हैपी बर्थ डे टू यू!' डीडीमा जंगल में अक्रम एक्सप्रेस की सोलहवीं वर्षगाँठ मनाई जा रही थी। टेबल पर तरह-तरह के चॉकलेट्स रखे गए थे। जिसे जितने चॉकलेट्स खाने हों उतने खाने की छूट थी। चॉकलेट-पीनट-बटर कप्स खाने के बाद कुल्फी को ऐसा लगा मानों उसे दुनिया की सबसे टेस्टी चीज़ मिल गई हो! उस दिन उसने खासतौर पर उसके लिए बनाए गए कैरट केक को छुआ भी नहीं।

लेकिन आप सोच रहे होंगे कि डीडीमा जंगल में इतने सारे चॉकलेट्स आए कहाँ से? बात यह है कि सातवीं जुलाई को 'वर्ल्ड चॉकलेट डे' सेलिब्रेट करने के लिए थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स अमेरिका के पेन्सिलवेनिया स्टेट के 'हर्शीलैन्ड' गए थे। हाँ, हाँ वही 'हर्शे' जहाँ के 'हर्शीस' चॉकलेट्स लोकप्रिय हैं। और वे वहाँ से सभी के लिए चॉकलेट्स लेकर आए थे।

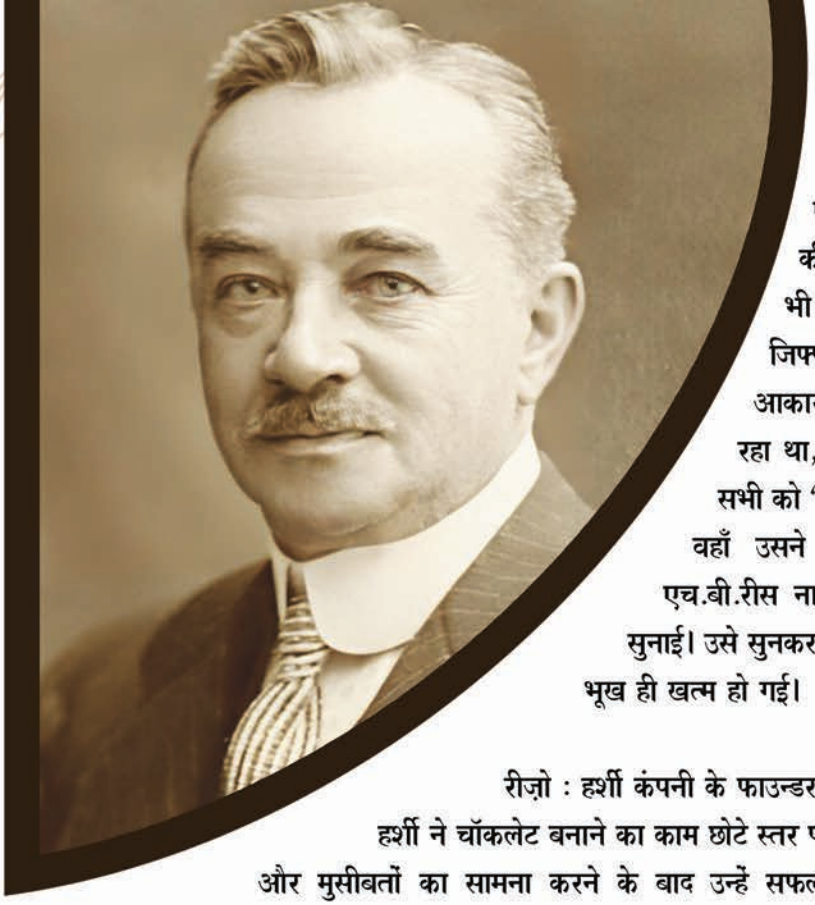

हर्शीलैन्ड में पैर रखते ही थीओ को बहुत भूख लगी। ऐसे अजब-गजब चॉकलेट वर्ल्ड की तो किसी ने कभी सपने में भी कल्पना नहीं की थी। अरे, जिफ्फी तो वहाँ के चॉकलेट के आकार की स्ट्रीट लाइट को खाने जा रहा था, तो ज़ोई ने उसे रोका। रीज़ो सभी को 'हर्शी स्टोरी म्यूज़ियम' ले गया। वहाँ उसने सबको मिल्टन हर्शी और एच.बी.रीस नाम के दो व्यक्तियों की स्टोरी सुनाई। उसे सुनकर कुछ देर के लिए तो थीओ की भूख ही खत्म हो गई।

रीज़ो : हर्शी कंपनी के फाउन्डर (स्थापना करने वाले) मिल्टन हर्शी ने चॉकलेट बनाने का काम छोटे स्तर पर शुरू किया। कई कठिनाइयों और मुसीबतों का सामना करने के बाद उन्हें सफलता मिली। उनकी कंपनी में एच.बी.रीस सज्जन काम करते थे। रीस के परिवार की ज़रूरतें बढ़ गई इसलिए उन्होंने हर्शी कंपनी छोड़ दी। कुछ समय बाद, मिल्टन हर्शी की सफलता देखकर रीस ने भी अपना एक अलग कैन्डी बिज़नेस शुरू करने का निश्चय किया।

ज़ोई : ओह, फिर तो दोनों में ज़ोरदार कॉम्पिटिशन हुआ होगा न?

रीज़ो : नहीं, नहीं। कॉम्पिटिशन तो नहीं हुआ लेकिन ऊपर से हर्शी ने रीस को उनके बिज़नेस के लिए 'मिल्क चॉकलेट' सप्लाइ की।

थीओ : अरे, रीस ने तो चॉकलेट बनाने का तरीका भी हर्शी से सीखा होगा। एक ही जगह पर दो कंपनियाँ कैन्डी बेचें तो कॉम्पिटिशन नहीं होता है?

रीज़ो : नहीं हुआ। हर्शी और रीस जीवनभर अच्छे मित्र बनकर रहे और एक-दूसरे की हेल्प की। और इसीलिए दोनों की मृत्यु के बाद 'हर्शी' और 'रीस' कंपनी एक हो गईं।

जिफ्फी : यदि हर्शी और रीस ने एक-दूसरे से आगे बढ़ने के लिए एक-दूसरे को तोड़ने की कोशिश की होती, तो एक भी कंपनी नहीं बचती। और आज देखो, दोनों कंपनियाँ एक हो गई हैं!

जी भरकर स्टोरी सुनने के बाद सभी ने पेट भरकर चॉकलेट्स खाए। और फिर, डीडीमा जंगल के सभी फ्रेन्ड्स के लिए बैग भरकर चॉकलेट्स पैक किए।

Akram Express

August 2024
Year : 12, Issue : 05
Conti. Issue No.: 137

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

बालमित्रों, आपने देखा है कि पिछले कुछ सालों में क्रिकेट कितना डेवलप हुआ है। क्या आपके पास कोई आइडिया है? कोई भी दो आउटडोर गेम्स को अधिक इंट्रेस्टिंग बनाने के लिए आप क्या करोगे?
आप का आइडिया हमारे साथ शेर कीजिए इस ९३१३६६५५६२

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशिप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशिप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।
२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।
१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मेगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral-Pratappura Road, At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.